International Journal of Sanskrit Research 2015; 1(3): 53-55

International Journal of Sanskrit Research

अनन्ता

ISSN: 2394-7519
IJSR 2015; 1(3): 53-55
© 2015 IJSR
www.sanskritjournal.com
Received: 17-01-2015
Accepted: 20-02-2015

विजेन्द्र कुमार आर्य
शोधच्छात्र,संस्कृत विभाग दिल्ली विश्वविद्यालय

Correspondence
विजेन्द्र कुमार आर्य
शोधच्छात्र,संस्कृत विभाग दिल्ली विश्वविद्यालय

व्याकरणशास्त्र परम्परा में भर्तृहरि का वाक्यपदीय

विजेन्द्र कुमार आर्य

व्याकरणशास्त्र समस्त विद्याओं में पवित्र एवं आदृत है। आचार्य भर्तृहरि ने व्याकरणशास्त्र को अपशब्दरूपी वाणी के मलों की चिकित्सा करने वाला बताया है [1]। आचार्यजन व्याकरण शास्त्र को 'शब्दानुशासन' नाम से व्यवहृत करते हैं, जिसे आचार्य पतञ्जलि ने 'शब्दानुशासनं' नाम शास्त्रमधिकृतं वेदितव्यम्' इस प्रकार स्पष्ट किया [2]। आचार्य पतञ्जलि ने लक्ष्य और लक्षण को व्याकरण कहा है [3]। अभिप्राय यह है कि वह शास्त्र जिसमें सूत्रों अथवा नियमों से शब्द व्युत्पत्ति या शुद्धि विषयक ज्ञान कराया जाये, वह शास्त्र व्याकरण है। इसकी महत्ता इस भाष्यवचन से स्पष्ट हो जाती है कि एक शब्द का भी यदि सम्यक् ज्ञान हो जाये तो वह स्वर्ग लोक की प्राप्ति कराने वाला होता है।
संस्कृत व्याकरणशास्त्र की मुख्यरूप से तीन परम्परायें प्राप्त होती हैं ।

1. सूत्रात्मक परम्परा
2. प्रक्रियात्मक परम्परा
3. दार्शनिक परम्परा

प्रथम परम्परा के अन्तर्गत पाणिनीय अष्टाध्यायी की सूत्रक्रमानुसार व्याख्यायें की गई हैं। जिसमें प्रमुख रूप से प्रथमावृत्ति, काशिका आदि ग्रन्थ हैं। द्वितीय परम्परा में अष्टाध्यायी के सूत्रों का क्रम लक्ष्यानुसारी परिवर्तित कर दिया गया है। इस परम्परा में ऐसे ग्रन्थों का समावेश है जिनमें लक्ष्य के अनुरोध से पाणिनीय अष्टाध्यायी के सूत्रों के क्रम में परिवर्तन कर व्याकरणशास्त्र में नवीन रूप प्रदान किया गया है। इसमें प्रयोगों के सम्यक् ज्ञान के लिए संज्ञासूत्र, विधिसूत्र आदि को रखकर व्याख्यान किया गया है। इस परम्परा में रूपावतार, प्रक्रियारत्न, रूपमाला, प्रक्रियाकौमुदी, प्रक्रियादीपिका, प्रक्रियाप्रदीप, प्रक्रियारञ्जन, वैयाकरणसिद्धान्तकौमुदी आदि हैं।
इन दोनों परम्पराओं के अतिरिक्त तृतीय परम्परा भी है इसके अन्तर्गत व्याकरणशास्त्र में निहित दार्शनिक पक्ष प्रस्फुटित हुआ है। इस परम्परा का प्रादुर्भाव प्राथम्येन व्याडिकृत 'सङ्ग्रह' ग्रन्थ में हुआ [4]। वर्तमान में 'सङग्रह' अनुपलब्ध है। इसलिए पतञ्जलि रचित व्याकरणमहाभाष्य ही इस परम्परा में उपलब्ध कृति है। महाभाष्यस्थ व्याकरण के सिद्धान्तों तथा 'सङग्रह' में उपलब्ध दार्शनिक विवेचनों को स्वल्प बुद्धि तर्क के बल पर बैजि, सौभरि आदि के द्वारा दूषित कर समाप्त कर दिया गया परन्तु कालान्तर में चन्द्राचार्य आदि के द्वारा उन भाष्य बीजों को उद्धार करने पर भर्तृहरि के गुरु वसुरात ने स्वयं चिन्तन, मनन तथा अभ्यास करके 'आगम संग्रह' बनाया। इससे यह ज्ञात होता है कि वाक्यपदीय गुरु वसुरात की देन है। भर्तृहरि के कथन से ज्ञापित होता है कि द्वितीयकाण्ड पर्यन्त की रचना या केवल द्वितीयकाण्ड, उनके गुरु की है, तृतीयकाण्ड तथा शायद ब्रह्मकाण्ड स्वयं उनकी रचना है [5]।

व्याकरणदर्शन वाक्यपदीय

भाषा को लेकर दार्शनिक चिन्तन की परम्परा का आरम्भ सुदूर प्राचीनकाल में हो गया था। इसके बीज वेद में दृष्टिगोचर होते हैं। भर्तृहरि ने भी कहा है कि प्राचीनकाल से लेकर अद्यावधि जितने भी शास्त्रों की रचना हुई है वह सब श्रुति के अनुसार हैं [6]। ऋग्वेद में कहा गया है कि एक महान देव मनुष्यों में प्रवेश किये हुए है इसके चार सींग व चार पदराशियाँ हैं और वे नाम, आख्यात, उपसर्ग, निपात हैं। इसके तीन पाद हैं वे भूत, भविष्यत्, वर्तमान– ये तीन काल हैं। जो इसके दो सिर कहे हैं वह दो प्रकार का शब्द है । एक नित्य दूसरा अनित्य। इसके सात हाथ हैं, वह सात विभक्तियाँ हैं। तीन स्थानों से बँधा हुआ है । छाती, कण्ठ, सिर में बंधा है। वृष्टि करने से वृषभ है तथा शब्द करता है। [7] वह महान् देव मनुष्यों में ऐसे अन्तर्निहित है कि सामान्य मनुष्य देखता हुआ भी नहीं देखता, इसे सुनता हुआ भी नहीं सुनता। परन्तु जो उसको देख लेता या सुन लेता है, उसके सामने वह प्रत्यक्ष उपस्थित हो जाता है [8]। इस भाँति व्याकरण का दार्शनिक भाग या प्रक्रिया भाग कोई नयी विचारधारा नहीं है। भर्तृहरि द्वारा वाक्यपदीय के माध्यम से दार्शनिक पक्ष का समुचित उन्नयन किया

गया है। भर्तृहरि की विचारधारा श्रुति से सम्बद्ध ही है और श्रुति का व्याख्यान करनेवाले ब्राह्मण ग्रन्थों में व्याकरण दर्शन का प्रतिपादन करते हुए कहा गया।

ओंकारं पृच्छामः को धातुः, किं प्रतिपदिकम्, किं नामाख्यातम्, किं लिङ्ग्म्, किं वचनम्, का विभक्तिः, कः प्रत्यय [9]।

यदि इन प्रश्नों का उत्तर दे दिया जाये तो सम्पूर्ण व्याकरण दर्शन सामने आ जाता है। जब धातु, प्रातिपदिक, नाम, आख्यात आदि के प्रति जिज्ञासा थी तो उनका समाधान भी किया गया और इनके आचार्य भी प्रसिद्ध हुए।

आख्यातोपसर्गानुदात्तस्वरितलिङ्गविभक्तिवचनानि च संस्थानाध्यायिनः आचार्या पूर्वे बभूवुः [10]।

वस्तुतः आचार्य भर्तृहरि ने वाक्यपदीय में इसी श्रुति परम्परा का अनुसरण करते हुए शब्द, स्फोट, जाति, द्रव्य, काल, लिङ्ग आदि विषयों का अपनी कृति में समालोचन किया है। इन विषयों पर भर्तृहरि से पहले भी चिन्तन हुआ था फिर भी भर्तृहरि ने इसे विशेष रूप से अपने ढंग से व्यस्थित कर गम्भीर प्रतिपादन किया। इसलिए उनके इस प्रतिपादन से प्रभावित विद्वानों की दृष्टि में भर्तृहरि ही व्याकरणदर्शन के प्रमाणिक और प्रतिष्ठापक विद्वान् हैं [11]।

वाक्यपदीय टीकायें

वाक्यपदीय की कारिकाओं में निहित व्याकरणदर्शन को भलीभाँति समझने के लिए प्राचीन समय से टीकाओं की रचना होनी आरम्भ हो गई थी। इन टीकाओं में से कुछ टीकाएँ प्राप्त हैं तथा कुछ अप्राप्त है। इसके अतिरिक्त कुछ आधुनिक टीकायें भी वाक्यपदीय पर रची गई है।

इन प्राचीन प्राप्त, अप्राप्त तथा आधुनिक टीकाओं में से कुछ प्रमुख टीकाओं को उद्धृत है ।

प्राचीन टीकायें

1. भर्तृहरि कृत स्वोपज्ञवृत्ति
2. पुण्यराजकृत प्रकाश टीका
3. हेलाराज रचित प्रकीर्ण प्रकाश
4. वृषभदेव की पद्धति टीका

अप्राप्त टीकायें

1. नेपाल के किसी पण्डित ने ब्रह्मकाण्ड पर एक संस्कृत टीका गोरखनाथपीठ, गोरखपुर के महन्त श्री अवैद्यनाथ जी के आदेश से लिखी थी [12]।
2. हेलाराज विक्रमी की 10वीं शताब्दी ने वाक्यपदीय के तीनों काण्डों पर टीका लिखी थी। आजकल केवल तृतीय काण्ड पर ही उनकी 'प्रकीर्ण प्रकाश' नामक टीका उपलब्ध है। इन्होंने प्रथमकाण्ड पर शब्द प्रभा और द्वितीय काण्ड पर 'वाक्य प्रदीप' नामक टीकायें लिखी थीं, जो आज उपलब्ध नहीं ह [13]।
3. 11वीं शती विक्रमीय के पुण्यराज ने भी वाक्यपदीय प्रथमकाण्ड पर टीका लिखी जो अब उपलब्ध नहीं है मात्र द्वितीय काण्ड पर ही उनकी टीका उपलब्ध है [14]।
4. फुल्लराज ने वाक्यपदीय के कितने भाग पर टीका लिखी यह अभी तक गवेषणा का विषय है। हाँ, टीका के कुछ भाग प्राप्त होते हैं। इनका समय क्या रहा होगा, यह कहना असम्भव है, जब तक उनके विषय में गवेषणा न हो [15]।

आधुनिक टीकायें

1. पं. द्रव्येश झा की प्रत्येकार्थप्रकाशिका टीका वाक्यपदीय, ब्रह्मकाण्ड पर
2. पं. सूर्यनारायण शुक्ल कृत भावप्रदीप टीका वाक्यपदीय, ब्रह्मकाण्ड पर
3. पं. रघुनाथ शर्मा कृत अम्बाकर्त्री टीका वाक्यपदीय, ब्रह्मकाण्ड, वाक्यकाण्ड तथा पदकाण्ड पर
4. आचार्य वामदेव की संस्कृत हिन्दी प्रतिभा व्याख्या वाक्यपदीय, ब्रह्मकाण्ड पर
5. वेदानन्द झा कृत नन्दा तथा सूर्यमाया हिन्दी संस्कृत प्रत्येकार्थप्रकाशिका के आधार पर वाक्यपदीय, ब्रह्मकाण्ड पर

भर्तृहरि के वाक्यपदीय में निहित व्याकरण दर्शन बीजरूप को इन प्राचीन तथा आधुनिक टीकाओ के माध्यम से सम्यक्रूप से अवगत किया जा सकता है ।

व्याकरणशास्त्र परम्परा में भर्तृहरि के वाक्यपदीय का अत्यन्तमहत्वपूर्ण स्थान है। वाक्यपदीयकार ने महाभाष्य में निबद्ध व्याकरणदर्शन को अत्यन्त समीचीनरूप से अपने ग्रन्थ वाक्यपदीय मे स्पष्ट किया है। जिससे हम कह सकते है कि व्याकरणशास्त्र परम्परा में भर्तृहरि के वाक्यपदीय के रूप में एक नया आयाम सम्बद्ध हुआ जिससे व्याकरणशास्त्र की अनेकानेक अबूझ युक्तियों का सम्यक् से उद्घाटन सम्भव हो सका है।

इति

सन्दर्भ

1. तद्द्वारमपवर्गस्य वाङ्मलानां चिकित्सिम्।
   पवित्रं सर्वविद्यानामधिविद्यं प्रकाशते।। वा.प. 1–14
2. म.भा. पस्पशाह्निक
3. लक्ष्यं लक्षणं चैतत्समुदितं व्याकरणं भवति। म.भा. पस्पशाह्निक
4. सङ्ग्रह एत्प्राधनान्येन परीक्षितम् ....। म.भा. पस्पशाह्निक
5. वा.प. – 2/481–485
6. वा.प. – 1/136–137, पूना संस्करण, 1966
7. चत्वारि श्रृङ्गा त्रयो अस्य पादा द्वे शीर्षे सप्त हस्तासो अस्य।
   त्रिधा बद्धो वृषभो रोरवीति महो देवो मर्त्यां आ विवेश।। ऋग्. 4–58–3
8. उत त्वः पश्यन्न ददर्श वाचमुत त्वः श्रृण्वन्न श्रृणोत्येनाम।
   उतो त्वस्मै तन्वं विसस्रे जायेव पत्ये उशती सुवासाः।। ऋग. – 10–17.4
9. गो. ब्रा. – 1–27–1
10. गो. ब्रा. –
11. I. It was Bhartrahari, author of the Vakyapadiya, who was the first grammarian to take up himself the task of evolving a school of Philosophy which is know by the name of 'verbal monims' Gauri Nath Shastri, P.W.M., P. XXIV.
    II. To Bharthari must be given the credit for raising Yuakarna to the rank of a Darsan, that is , discipline by following which man can attain liberation. K.A.S. Iyer, Bhartrhari, 402.
12. वाक्यपदीय ब्रह्मकाण्ड भूमिका शिवशङ्कर अवस्थी
13. विस्तारेणागमप्रामाण्यं वाक्यपदीयेऽस्माभिः प्रथमकाण्डे शब्द प्रभायां निर्णीतमिति तत एवाधर्यम्
    काण्ड – 3, जातिसमुद्देश, कारिका – 46
14. एवं शब्दस्य प्रयोजनसहितं स्वरूपादिकं लेशतो निर्णीतम्।
    तस्य च साधरण्येन वाचकत्वं व्यवस्थापितम्। वा.प.
15. वाक्यपदीय ब्रह्मकाण्ड भूमिका शिवशङ्कर अवस्थी

सन्दर्भ–ग्रन्थ सूची
वर्णानुक्रमानुसारिणी

अभ्यंकर ;के.वी. लिमये — वाक्यपदीयम्, भण्डारकर ओरियण्टल, रिसर्च इंस्टिट्यूट, पूना – 1975

अय्यर, सुब्रह्मण्य — भर्तृहरि ,हि. अनु. रामचन्द्र द्विवेदी राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर, 1981

वाक्यपदीय पदकाण्ड हेलाराज टीका प्रकीर्ण प्रकाश डेकन कॉलेज पूना, 1973

वाक्यपदीय ब्रह्मकाण्ड ,स्वोपज्ञवृत्ति पद्धति डेकन कॉलेज, पूना, 1966

त्रिपाठी, रामसुरेश संस्कृत व्याकरणदर्शन, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली, 1972

त्रिवेदी, क्षेमकरणदास गोपथ ब्राह्मण, सं.–प्रज्ञा देवी एवं मेधा देवी, चौखम्बा संस्कृत प्रतिष्ठान, दिल्ली – 1993

द्विवेदी, कपिलदेव अर्थविज्ञान और व्याकरणदर्शन हिन्दुस्तान एकेडमी, उत्तर प्रदेश, इलाहाबाद, 1951

पत×जलि व्याकरण महाभाष्य ;प्रदीप – उद्योत सहित, सम्पा. – गुरुप्रसाद शास्त्री, भाग–1,2,3,4,5,6, प्रतिभा प्रकाशन, दिल्ली – 2001

पाण्डेय, रामाज्ञा व्याकरणदर्शन प्रतिमा, सं.–रामगोविन्द शुक्ल, सं.सं. वि. विद्या., वाराणसी, 1979

भर्तृहरि वाक्यपदीय ब्रह्मकाण्ड, ;पं. सूर्य नारायण शुक्ल कृत भाव प्रदीप टीका सं. रामगोविन्द शुक्ल, काशी सं.सि. वाराणसी

वाक्यपदीय ब्रह्माकाण्ड, सं. शिवशङ्कर अवस्थी, चौखम्भा विद्याभवन, वाराणसी, 1990

मिश्र, केशव तर्कभाषा, सं. श्री निवासशास्त्री साहित्य भण्डार, मेरठ, 2011

मीमांसक, युधिष्ठिर संस्कृत व्याकरण शास्त्रा का इतिहास भा. 1. 2 वाराणसी, सम्वत्, 2019

वर्मा, सत्यकाम व्याकरण की दार्शनिक भूमिका, मुन्शीराम मनोहरलाल, दिल्ली, 1971

भाषातत्व और वाक्यपदीय मुन्शीराम मनोहरलाल, दिल्ली 1968

वामन, जयादित्य काशिका, ;न्यास पदमंजरी संहिता सम्पादक, डॉ. जयशङ्कर लाल त्रिपाठी एवं डॉ. सुधाकर मालवीय, तारा बुक एजेन्सी, वाराणसी, 1988

विश्वबन्धु ऋग्वेद, विश्वेश्वरानन्द वैदिक – शोध संस्थान – होशियारपुर, 1965

शर्मा, रघुनाथ वाक्यपदीय ब्रह्मकाण्ड, ;अम्बाकर्त्री टीका एवं स्वोपज्ञवृत्ति सहित 1963

वाक्यपदीय वाक्यकाण्ड, ;अम्बाकर्त्री टीका, स्वोपज्ञ, पुण्यराज, प्रकाश, सहित, 1968

वाक्यपदीय पदकाण्ड, अम्बाकर्त्री टीका, हेला. प्रकाश टीका, जाति, द्रव्य, सम्बन्ध सुमुद्देश पर, 1974

वाक्यपदीय वृत्तिसमुद्देश, ;अम्बाकर्त्री टीका, हेला. प्रकाश टीका सहित, 1977

वाक्यपदीय पदकाण्ड, ;अम्बाकर्त्री टीका, हेला. प्रकाश टीका, भूयोद्रव्य, गुण, दिक्, साधन, क्रिया, काल, पुरुष, संख्या, उपग्रह, लिङ्ग समुद्देशों पर, प्रकाशन – सं. सं.वि. वाराणसी, 1979

वाक्यपदीय पाठभेदनिर्णय, स.स.वि. वाराणसी, 1980

शास्त्री, रामशरण पाणिनीय व्याकरणशास्त्रे, वैशेषिक तत्त्व मीमांसा – दिल्ली।

English Books

Cardona George – Panini (A Survey of Research) Motilal Banarsidas, Delhi, 1997

Iyer, K.A.S. – Bhartrhari (A Study of the Vakyapadiya in the light of ancient (commentaries) Deccan College, Poona, 1969

Iyer, K.A.S. English Translation of the Vakyapadiya of Bhartrhari with Vartti, Poona, 1969.

Shastri, Gourinath The Philosophy of Word and Meaning Sanskrit College, Calcutta, 1951

Carmen Dragonetti(Proceedings of the International Seminar), Delhi, December 12-14, 2003), Edited by Mithilesh Chaturvedi) Moti Lal Banarasidas, Delhi.